

कुप्यति. c. पदवीं st. भवनं. d. निर्दोवारिक st. नो दोवारिक, परुषं wie wir, संवित्पदम् st. शर्मप्रदम्.

1531. = MBH. 12, 884, b. 885, a. b. लभ्यते (bei vorhergehendem संवासे) ज्ञातु केनचित्.

1532. = I, 93 JOHNS. S. 70 ed. RODR. d. मनोहराः st. मनोरमाः.

1534. Vgl. das Wörterbuch u. पापलोक्च.

1560. = MBH. 1, 5144. c. d. नाराज्ञा पार्थिवस्यापि सखिपूर्वं किमिष्यते.

1562. Vgl. MBH. 12, 4925. 5050.

1563. Vgl. M. 3, 155.

1566. Vgl. MBH. 12, 6000.

1569. Auch MBH. 1, 5550. a. b. नास्य च्छिद्रे परः पश्येच्छिद्रेण परमन्विषात्.

1574. Lies zunehmender st. wechselnder.

1582. RAVIG. Çl. 80:

रमनस'रेश'श'श'वे'म'शे'श'म'र' | हे'र'वे'र'र'र'र'श'र'र'र'र' |

र'र'र'र'र'र'र'र'र'र' | र'र'र'र'र'र'र'र'र'र' |

Der mächtig gewordene Pöbel schmähet zuerst den Fürsten: Erdenstaub, in die Höhe geworfen, fällt auch zuerst auf den Werfenden. Sch.

1587. = HIT. II, 158 JOHNS. S. 246 ed. RODR. c. मनस्तु यस्य वै (वा RODR.).

1593. = ed. RODR. S. 199. a. नियोज्यार्थ°. JOHNSON übersetzt: «The safety of kings requires the expedient of confiscating the wealth of those in office; constant inspection; gift of preferment, and change of office.» c. प्रतिपत्तिप्रदान bedeutet jedenfalls Ertheilung von Ehren, Ehrenerweisung.

1602. a. ऽस्मिन्ना° Druckfehler für ऽस्मिन्ना°.

1606. = KÂVYÂD. 2, 218. Vgl. Spruch 2101.

1610. Vgl. Spruch 2989.

1612. = HIT. II, 68 JOHNS. d. परिकृत्यते.

1615. = 3, 9 lith. Ausg. II. d. धृष्टः st. धष्टः.

1619. = NĪTISAṂK. 82. c. अभ्युत्थानम्.

1626. = NĪTISAṂK. 61 (ÇĀNTIÇ. 24). c. ब्रह्मास्पदं. d. विष्णुपदं पुनः पुनरहे आशा°.

1633. = 1, 59 lith. Ausg. II. d. विजिताः श्रवलाः.

1638. = ed. RODR. S. 234. a. Umgestellt: गणयति न.

1643. = 2, 88 lith. Ausg. II. a. यस्य st. यत्र.